| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

# अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की प्रासंगिकता

**राकेश कुमार शर्मा**

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

**सार**

विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार के लिए वहाँ के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं । विदेशी हिंदी साहित्यकारों का योगदान भी मिल रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कई संस्थाएँ हिंदी के प्रसार एवं प्रचार में जुटी हुई हैं । आज विश्व भर में करीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिंदी संबंधी कोसों का संचालन कर रहे हैं।

**परिचय**

भाषा एक अर्थ में मनुष्य की अस्मिता है । भाषा ही निर्माण, विकास, सामाजिक - सांस्कृतिक पहचान का साधन है भाषा और साहित्य की समृद्धि तथा भाषा-भाषियों की संख्या आदि सभी दृष्टियों से 'हिंदी' संसार की विशिष्ट एवं कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण भाषाओं में एक है । 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में यह निर्णय लिया गया कि 'हिंदी' भारत की राजभाषा होगी । जिसकी लिपि देवनागरी और अंको का रूप अंतर्राष्ट्रीय होगा {भारतीय संविधान भाग-17 के अध्याय की धारा 343(1) में वर्णित} इस निर्णय को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। साथ ही हिन्दी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप के इतिहास में 10 जनवरी 1975 का दिन चिरस्मरणीय है। इस दिन नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हुआ था। इस अवसर पर हिन्दी के विश्वव्यापी स्वरूप को रेखांकित करते हुए मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री, शिवसागर रामगुलाम जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था - हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है लेकिन हमारे लिए इस बात का अधिक महत्व है कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, गुयाना, अफ्रीका के कई देश इस बात का मान करते हैं कि भारत की राष्ट्रभाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में उनका हाथ रहा है।

हिंदी एक समृद्ध भाषिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परंपरा की वाहिनी है । वह संस्कृत जैसी संपन्न भाषा की उत्तराधिकारिणी है। क्योंकि यहां विश्व में हिंदी के महत्व को रेखांकित करना है, अत: यह उल्लेखनीय है कि हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य भी बड़ा विशाल है । आज विश्व स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता एवं व्याप्ति अनुभव की जा सकती है । आज जब हम हिंदी को विश्व भाषा में परिवर्तित होते हुए देख रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम उन विशेषताओं को जान लें, जो किसी भाषा को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती हैं ।

- सर्वप्रथम जिस भाषा को हम वैश्विक भाषा का दर्जा दे रहे हैं उस भाषा को जानने, समझने एवं लिखने वालों की संख्या अधिक से अधिक हो और वे विश्व के अनेक देशों में उस भाषा का प्रयोग कर रहे हों ।
- उस भाषा में साहित्य-सृजन की एक सुदीर्घ परंपरा हो और सभी विधाएं वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों । उस भाषा में सृजित कम से कम एक विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो ।
- उसकी शब्द संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की अन्य बड़ी भाषाओं से विचार-विनिमय करते हुए एक-दूसरे को प्रेरित-प्रभावित करने में सक्षम हो ।
- उसकी शाब्दी एवं आर्थी संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन-पाठन और लेखन सहज एवं संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्करण और परिवर्तन की सम्भावना हो ।[1,2]
- उसमें ज्ञान, विज्ञान के तमाम अनुशासनों में वांग्मय सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नये विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो ।
- वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो ।
- वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो ।
- वह जनसंचार माध्यमों में बड़े पैमाने पर देश विदेश में प्रयुक्त हो रही हो । वैश्विक मीडिया में उसका प्रभावी हस्तक्षेप हो ।
- उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्वपूर्ण भाषाओं में उपलब्ध हो रहा हो । उसके पठन-पाठन तथा प्रसारण की सुविधा अनेक देशों में उपलब्ध हो ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

- उसमें उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली हो तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के नवीनतम आविष्कारों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम हो ।
- वह विश्व चेतना की संवाहिका हो । वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त, विश्व दृष्टि संपन्न कृतिकारों की भाषा हो, जिससे उनके द्वारा सृजित साहित्य विश्व बंधुत्व, विश्व मैत्री एवं विश्व कल्याण की भावना से अनुप्राणित हो।

जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी को परखते हैं तो यह प्रायः सभी मानकों पर खरी उतरती है ।

## विचार-विमर्श

इस प्रकार सही अर्थों में 'विश्वभाषा' उसे ही कहा जा सकता है जिसका चिंतन क्षेत्रीय परिधि को लांघ गया हो, जो राष्ट्र की सीमा का अतिक्रमण कर गया हो और समग्रतः विश्वमानव की चेतना में रूपांतरित हो रहा हो । यह तभी संभव हो पाता है, जब भाषा अपने क्षेत्र, वर्ग, जाति आदि के सामुदायिक चरित्र से ऊपर उठ जाती है ।

### विश्व की प्रमुख भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा की स्थिति

संयुक्त राष्ट्र संघ की 6 आधिकारिक भाषाएं है - अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश । किन्तु आज विश्व स्तर पर हिंदी की इतनी मजबूत स्थिति होने के बावजूद भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को स्थान नहीं मिल पाया है । जबकि यह सर्वविदित है कि हिंदी मात्र एक देश की ही भाषा नहीं है, वह विश्व-भर में फैले लाखों-करोड़ों प्रवासी भारतीयों और हिंदी-सेवियों के सांस्कृतिक पहचान की भाषा है ।

हिंदी भाषिक आंकड़ों की दृष्टि से सर्वाधिक प्रमाणिक ग्रंथों के आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ की 6 आधिकारिक भाषाओं की तुलना में हिंदी के मातृभाषा वक्ताओं की संख्या निम्न तालिका में प्रस्तुत की जा रही है। यह संख्या मिलियन (दस लाख) में है।[3,4]

| भाषा | स्रोत-1 | स्रोत-2 | स्रोत-3 | स्रोत-4 |
|---|---|---|---|---|
| चीनी | 836 | 800 | 874 | 874 |
| हिंदी | 333 | 550 | 366 | 366 |
| स्पेनिश | 322 | 400 | 322-358 | 322-358 |
| अंग्रेजी | 322 | 400 | 341 | 341 |
| अरबी | 186 | 200 | --- | --- |
| रूसी | 170 | 170 | 167 | 167 |
| फ्रांसीसी | 072 | 090 | 077 | 077 |

इस तालिका से स्पष्ट है कि संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को भी स्थान मिलना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त विश्वभर में 3500 भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें 16 भाषाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग 5 करोड़ से अधिक लोग करते हैं। विश्व की ये 16 भाषाएँ हैं :-

| | | | |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | उर्दू | तेलुगु | मलय-बहासा |
| अरबी | चीनी | पुर्तगाली | रूसी |
| अंग्रेजी | जर्मन | फ्रांसीसी | स्पेनिश |
| इतालवी | तमिल | बांग्ला | चीनी |

यह गौरव की बात है कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी पाँच भाषाएँ विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं की सूची में शामिल हैं।

आज हिंदी भाषा का भूमंडलीकरण हो गया है । दिन-प्रतिदिन विश्व में हिंदी का महत्व बढ़ता ही जा रहा है । आज हिंदी को अपनी योग्यता प्रमाणित नहीं करनी है, वह स्वयं ही सर्वशक्ति संपन्न भाषा बनकर उभर रही है। हिंदी सर्वदा ही मूल्यों, आकांक्षाओं एवं मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती हुई विश्वबन्धुत्व के आदर्श को आत्मसात् किए हुए है । प्रसिद्ध भाषाविद् और विचारक **ई.एम.सिओरन** ने बड़े महत्व की बात कही है, "**कोई भी व्यक्ति किसी देश में निवास नहीं करता, बल्कि भाषा में निवास करता है।**" हिन्दी का वैश्विक स्वरूप मुख्य रूप से देशों के आधार पर चार वर्गों में विभाजित है जिनमें सर्वप्रथम फीजी, टोबेगो, त्रिनिदाद, गुयाना, मॉरीशस, एवं सूरीनाम देश आते हैं। दूसरे वर्ग में अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, इंग्लैंड, हालैंड, मलेशिया, सिंगापुर आदि

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

देश हैं । तीसरे वर्ग में पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका हैं और अंतिम वर्ग में रूस, कोरिया, मंगोलिया, चीन, जापान, पोलैंड आदि देश हैं।

**विश्व भर में हिंदी शैक्षणिक संस्थानों, संस्थाओं एवं प्रकाशनों की उपस्थिति**

विश्व भर में हिंदी शैक्षणिक संस्थानों, संस्थाओं एवं प्रकाशनों की भरमार है, इनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

अमेरिका में 150 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों में, इंग्लैंड के 4 ( केम्ब्रिज, ऑक्सफोर्ड, लंदन, यार्क ) विश्वविद्यालयों में, कोरिया के 2, नीदरलेंड और इट्ली के 4 एवं चीन के 20 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन - अध्यापन काफी समय से हो रहा है। रूस और नार्वे में प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्वविद्यालय तक हिंदी पढ़ाई जाती है।[5,6]

यू.के. में "गीतांजलि", "यू.के. हिंदी समिति", "भारतीय भाषा संगम", "बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय", "हिंदी भाषा समिति", "कृति यू.के", "चौपाल", "कथा यू.के" एवं "कृति इंटरनेशनल" आदि अनेक हिंदी संस्थाएं कार्यरत हैं। कनाडा में "पनोरा", "हिंदी साहित्य सभा", "हिंदी प्रचारिणी सभा", आदि हिंदी संस्थाएं कार्यरत हैं । नीदरलेंड में "हिंदी परिषद", "डच हिंदी समिति", "हिंदी प्रचार संस्था", "गोपिया इंटरनेशनल", सनातन एवं आर्यसमाजी संस्थाएं कार्य कर रही हैं ।

इन संस्थाओं के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है जिनमें मुख्य रूप से "विश्वा", "हिन्दी जगत", "विश्व विवेक", "बाल भारती", "हिन्दी चेतना", "क्षितिज" अमेरिका से, "नमस्ते कनाडा", "वसुधा", "विश्व भारती", "हिंदी टाइम्स", "हिंदी अब्राड" आदि कनाडा से, "विश्व हिन्दी समाचार" मॉरिशस से, "अभिव्यक्ति" संयुक्त अरब अमीरात से एवं नार्वे में 1990 से "शांतिदूत" पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

इन देशों में हिंदी सांस्कृतिक सेतु का ही काम करती है । यहां हिंदी के प्रति काफी रुचि दिखाई देती है । इन देशों के साथ अन्य देश भी हिंदी भाषा के माध्यम से इसके विपुल साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं, भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं और इस देश की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता को समझना चाहते हैं। यही कारण है कि पूर्वी यूरोप के देशों में व्यापक स्तर पर हिंदी साहित्य का अनुवाद हो रहा है। अतः अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के कई रंग और कई पक्ष दिखाई देते हैं । हिन्दी आज भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है, वह आज विश्व भाषा के रुप में प्रतिष्ठित है ।

आज विश्व में हिंदी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । किन्तु इसे सर्वोच्च स्थान दिलाने के लिये निम्न कदम आवश्यक हैं :-

- हम विज्ञान, वाणिज्य, विधि तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ्यसामग्री को हिंदी में उपलब्ध करायें ।
- सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी बोलने, लिखने, समझने वालों की सही संख्या निर्धारित करें ।
- भारत में हिंदी के सवेक्षण में हिंदी की उपभाषाओं को हिंदी से पृथक न करके हिंदी में शामिल करें ।
- हम संगठित होकर प्रयास करें कि हिंदी को शीघ्रातिशीघ्र संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रुप में मान्यता दिलाना मिले ।
- हिंदी प्रेमियों को हिंदी के प्रति देशवासियों को जागृत करना चाहिए । अपनी मातृभाषा को नहीं भूलना है और इसे अपनाने में संकोच न करें ।[7,8]

राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रतिष्ठा में जो समय लग रहा है वह हमारी निष्ठा की कमी को बताने वाला है । प्रसिद्ध **निबन्धकार विद्यानिवास मिश्र** जी ने कहा है कि "**हिन्दी भाषीजन स्वाति की प्रतीक्षा न करें। वे अपने तप के ताप से स्वयं को बादल के रुप में रुपांतरित करें। धरती को हिन्दी के पावस की प्रतीक्षा है।**" हिंदी भाषा की किसी अन्य भाषा से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है किंतु मेरा मानना है कि भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा जितनी ही जरुरी है। हिंदी में पूर्ण सामर्थ्य है और उसके पास विश्वबंधुत्व की शक्ति है ।

अंत में बस यही कहना है कि "**हिंदी का प्रचार-प्रसार हिंदी पर लिखने से नहीं बल्कि हिंदी में लिखने से होगा**", अत: हिंदी का सर्वत्र प्रयोग करें एवं बिल्कुल भी संकोच न करें।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

## परिणाम

संसार में हिंदी बोलने वालों की संख्या चीनी भाषा के उपरांत द्वितीय क्रम पर आंकी गई है, परंतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा की प्रतिष्ठा केवल उस भाषा को बोलने वालों की संख्या पर आधारित नहीं होती है, वरन अनेक प्रतिमानों पर निर्भर करती है. इनमें प्रमुख हैं:
अ. उपयोगकर्ताओं की संख्या एवं उनका क्षेत्रीय विस्तार :
ब. उपलब्ध साहित्य की व्यापकता एवं उसका स्तर:
स. अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों, सेवाओं एवं वाणिज्य में उपयोग:
द. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रचलन:
य. भाषा से सम्बंधित देश का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामरिक महत्व:

यदि किसी भाषा के उपयोगकर्ता सीमित क्षेत्र में रहता हैं, तो भाषा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उतनी महत्वपूर्ण नहीं होगी, जितनी उन्हीं उपयोगकर्ताओं के विस्तृत क्षेत्र में बसे होने पर होगी। किसी भाषा के साहित्य का बहुआयामी होना एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी स्वीकार्यता उस भाषा को प्रतिष्ठित करते हैं। किसी भाषा को प्रतिष्ठित करने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों, सेवाओं, एवं वाणिज्य में उस भाषा के उपयोग की स्थिति। वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है एवं कोई भाषा इनमें अपना स्थान बनाये बिना महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है। भाषा का महत्व बहुत कुछ उसे बोलने वाले देश के आर्थिक एवं सामरिक महत्व पर भी निर्भर करता है।

हिंदी भाषा के अभ्युदय का काल ग्यारहवीं-बारहवीं सदी के आस-पास माना जाता है। तत्कालीन सेनाओं में भर्ती होने वाले विभिन्न भाषा-भाषी सैनिकों की मिश्रित भाषा के रूप में उदित होकर यह द्रुतगति से अधिकांश उत्तर भारत में फैल गयी थी। दुर्भाग्यवश लगभग उसी काल में इस देश में यह परम्परा प्रारम्भ हुई कि देश से बाहर जाने वाले को जातिच्युत एवं धर्मच्युत माना जाये। इस कारण अत्यंत सरल एवं वैज्ञानिक लिपि एवं व्याकरण होते हुए भी यह भाषा विदेशों में न जा सकी। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में यूरोप के अधिकांश देशों में 'ग़ुलामी प्रथा' समाप्त होने पर यूरोपियन्स को अपने अधीन अनेक देशों में सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता पड़ी और भारत (मुख्यतः बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश) से जहाज़ों में भरकर बंधुआ मज़दूर फ़ीज़ी, मौरिशस, गुयाना, त्रिनिडाड-टोबैगो, सूरीनाम आदि देशों में भेजे गये। इन्होंने वहां अपनी भाषा एवं परम्पराओं को बहुत कुछ जीवंत रखा। कुछ हिंदी-भाषी दक्षिणी अफ्रिका, अमीरात आदि देशों में व्यापार अथवा नौकरी के उद्देश्य से भी गये और वे भी वहां हिंदी के वाहक बने। स्वतंत्रता के उपरांत अनेक वैज्ञानिक, इन्जीनियर और डाक्टर आदि इंग्लैंड, अमेरिका, आदि देशों में जाने लगे, जिनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ी आज वहां हिंदी के ध्वजवाहक के रूप में कार्यरत है।

हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके प्रयत्न से १० जनवरी, १९७५ को नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन के दौरान वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि विश्व हिंदी सम्मेलनों एवं इस प्रकार के आयोजनों की एक श्रृंखला प्रारभ हो गई, जिसने हिंदी की विश्व में पहिचान बनाने एवं हिंदी लेखकों में अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क एवं सम्बन्ध बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सन १९७६ में मौरीशस में हुआ. इससे आशान्वित होकर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा अपने उद्गार इन शब्दों में व्यक्त किये गये,
"यह सम्मेलन अपार भविष्य का संदेश लेकर आया है.....सारे संसार के मनीषी यहां एकत्र हुए हैं और हिंदी के प्रति अपने प्रेम की चर्चा कर रहे हैं।"

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन ७ वर्ष के उपरांत सन १९८३ में दिल्ली में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी द्वारा दिया हुआ सम्बोधन हम सभी हिंदी प्रेमियों के लिये सदैव मार्गदर्शक रहेगा,
"साहित्य, संस्कृति और सद्भाव की भाषा हिंदी को, व्यापार-उद्योग, तथा प्रौद्योगिकी की भाषा बनाना चाहिये, जिससे हिंदी किसी अनुशंसा से नहीं, अपितु अपनी शक्ति से संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन सके।'[9,10]
अगला विश्व हिंदी सम्मेलन सन १९९३ में पुनः मौरिशस में आयोजित हुआ और पांचवां सम्मेलन सन १९९६ में त्रिनिदाद में हुआ, जिसका प्रमुख विषय "अप्रवासी भारतीय और हिंदी" रखा गया। छठा विश्व हिंदी सम्मेलन, जो १४ सितम्बर, १९९९ से लंदन में

आयोजित हुआ, उसमें लिये गये संकल्प हिंदी के भविष्य के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, ये है:
१. हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकास

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

२. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना
३. विदेशों हेतु हिंदी का मानक पाठ्यक्रम तैयार करना
४. विश्व हिंदी पत्रिका का प्रकाशन
५. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनाना
६. मौरिशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना
७. हिंदी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना
८. भारत में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण
९. विदेशी हिंदी लेखन के प्रकाशन की व्यवस्था एवं उसको पाठ्यक्रम में स्थान दिलाना

सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन सन २००३ में सूरीनाम में आयोजित हुआ, जिसका प्रारम्भ ५ जून को किया गया, क्योंकि इसी तिथि को भारत के बंधुआ मज़दूरों का प्रथम जहाज़ सूरीनाम पहुंचा था। आठवां सम्मेलन न्यूयौर्क में १५-१७ जुलाई, २००७ को आयोजित हुआ, जिसका प्रमुख विषय था, 'विश्व मंच पर हिंदी'. इस सम्मेलन को संयुक्तराष्ट्र संघ के महासचिव श्री बान की मून ने भी सम्बोधित किया। नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन जोहानिसबर्ग, दक्षिणी अफ़्रिका में २२-२४ सितम्बर को हुआ जिसमें "भाषा की अस्मिता और हिंदी के वैश्विक संदर्भ" पर विचार किया गया। अगस्त, २०१८ में मौरिशस में विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने रुचिपूर्वक भाग लिया। इससे इतना स्पष्ट है कि हिंदी के प्रति विश्व में रुचि बढ़ रही है।

वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषायें ६ हैं- इंग्लिश, फ़्रेन्च, स्पैनिश, रशियन, चीनी और अरबी। जहां तक बोलने वालों का प्रश्न है, इनमें फ़्रेंच, स्पैनिश, रशियन और अरबी हिंदी के आस-पास भी नहीं हैं। भारत अब विकास के मार्ग पर अग्रसर है और उचित समय आ गया है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का स्थान दिलाया जावे।

विदेशों में हिन्दी भाषियों एवं हिंदी की स्थिति पर विचार करते समय पहले हम उन देशों की स्थिति को देखेंगे जहां हिंदुस्तानी लोग १९वीं सदी के उत्तरार्ध एवं २०वीं सदी के प्रारम्भ में बंधुआ मज़दूर की भांति ले जाये गये थे। फ़ीजी में ३७% हिंदुस्तानी हैं, जो किसी न किसी प्रकार की हिंदी बोलते हैं वहां साउथ पैसिफ़िक विश्वविद्यालय में हिंदी विषय भी पढ़ाया जाता है वहां फ़िजिअन, एवं इंग्लिश के अतिरिक्त हिन्दुस्तानी भी राजभाषा है। फ़ीजी में हुए फ़ौजी विद्रोह के समय लगभग ३०,००० हिन्दुस्तानी मूल के फ़िजियन्स.न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया, टोंगा और कनाडा जाकर बस गये थे और वे अब वहां पर हिंदी की अलख जगा रहे हैं। मौरिशस में ६८% प्रतिशत इंडो-मौरिशियन्स हैं, जो फ़्रेन्च अथवा इंग्लिश के साथ हिन्दुस्तानी भाषा बोलते हैं। वहां विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना के पश्चात हिंदी के प्रसार का कार्य और प्रगति पर है। सूरिनाम की तीन राजभाषाओं में हिंदी भी है। डच, क्रिओल, और सरनामी (मुख्यतः हिंदी). यद्यपि त्रिनिदाद-टोबैगो में हिंदी बोलने वाले कम ही रह गये हैं, परंतु त्रिनिदाद की भाषा में बहुत से हिंदी के शब्द सम्मिलित हो गये हैं गुयाना में ४३% इन्डो-गुयानीज़ हैं। अमीरात एवं दक्षिण अफ़्रिका में हिंदी बोलने वालों की अच्छी संख्या है और बढ़ रही है।

विकसित देशों में प्रारम्भ में जो भारतीय गये, वे अधिकांश वहीं के रंग में रंग गये, परंतु भारत की आर्थिक एवं सामरिक उन्नति तथा अनेक संस्थाओं के प्रयत्न से उनकी द्वितीय एवं तृतीय पीढियों में भारत एवं हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई है। इस कार्य में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद, विश्व हिंदी समिति, विश्व हिंदी सम्मेलन, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन (जयप्रकाश मानस द्वारा प्रायोजित), गीतांजलि बहुभाषीय समुदाय, (बर्मिंघम), विश्व हिंदू परिषद जैसी संस्थाओं का योगदान अनुकरणीय है।

आज विश्व के लगभग १५० विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। इसके अतिरिक्त अनेक संस्थायें भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगीं हुईं हैं। हिंदी भाषा के अनेक दूरसंचार के चैनल खुल रहे हैं। हिंदी के गानों एवं चलचित्रों की मांग बढ़ रही है, तथा विदेशों में हिंदी में चलचित्र बनाये जा रह हैं। हिंदी की पत्रिकायें विश्वा (अमेरिका), अनहद कृति(अमेरिका-भारत), हिंदी चेतना (कनाडा), पुरवाई (यू. के.), अभिव्यक्ति-अनुभूति (शारजाह), साहित्यकुन्ज (कनाडा) आदि जगप्रसिद्ध हो रहीं हैं। हिंदी के ई-कविता समूह, ई-चिंतन समूह (न्यू जर्सी), कथा यू. के. आदि के सदस्यों की संख्या लगातार बढ़ रही है। नार्वे, जापान, रूस, फ़्रांस, हालैंड आदि में अनेक देशी-विदेशी प्रोफ़ेसर्स हिंदी की अलख जगाये हुए हैं। श्री अमृत मेहता 'सार-संसार' नामक ई-पत्रिका द्वारा विश्व की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का हिन्दी मे अनुवाद प्रकाशित कर हिंदी को समृद्ध कर रहे हैं। हिंदी के लेखक अन्तर्राष्ट्रीय कवि-सम्मेलनों में भाग ले रहे हैं एवं अन्तर्राष्ट्रीय 'रेज़ीडेंसीज़' में चयनित हो रहे हैं।[8,9]

## निष्कर्ष

इतना सब होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आज हिन्दी का भविष्य इंग्लिश अथवा चीनी भाषा के भविष्य जैसा उज्ज्वल मान लेना भूल होगी। इसके दैशिक कारण भी हैं और वैदेशिक कारण भी हैं। अंदरूनी कारणों में सर्वप्रथम हिंदी का भारत की राष्ट्र-भाषा न होना है, वरन राजभाषाओं में भी हिन्दी का अंग्रेज़ी के बाद द्वितीय स्थान होना है। संविधान में उल्लिखित भाषाओं में अधिकांश भाषायें हिन्दी से प्रतियोगी भाव रखती हैं, यहां तक कि हिंदी की बोलियां भी प्रतियोगिता में उतर आयीं है. अभी हाल में मैथिली, जो हिंदी की एक बोली हुआ करती थी, को राजनैतिक तुष्टीकरण हेतु हिंदी से भिन्न भाषा का स्थान दे दिया गया है। तब से भोजपुरी, राजस्थानी, आदि बोलने

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 8, Issue 6, June 2021 |

वाले भी उन्हें हिंदी से भिन्न भाषा बनाने हेतु आंदोलनरत हो गये हैं। संविधान के अनुच्छेद ३४८ के अनुसार उच्च न्यायालयों की भाषा तथा संसद एवं विधान मंडलों द्वारा निर्गत विधिक प्रपत्रों की मान्य भाषा केवल अंग्रेज़ी ही है। अधिकांश विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा अंग्रेज़ी के माध्यम से ही दी जती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो बहुत कम विद्यालय ही हिंदी में शिक्षा देते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान की शिक्षा में विभिन्न विद्यालय मानक शब्दावली का प्रयोग न करके एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न अनुवादों का प्रयोग करते हैं, जिससे हिंदी में विज्ञान पढ़ने वाले छात्र भ्रम में पड़ जाते हैं। हिंदी के अनेक लेखक अभी तक कम्प्यूटर के अभ्यस्त नहीं हो पाये हैं और विद्युत संकट के कारण ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश युवा इसके ज्ञान से वंचित रह रहे हैं। हिंदी में अनुवादकों की बड़ी कमी है क्योंकि भारत में अनुवादक होना एक व्यवसाय के रूप में बहुत कम व्यक्ति लेते हैं, जब कि पश्चिमी देशों में अनेक नामी साहित्यकार अनुवादक का कार्य करते हैं। हिंदी का समस्त साहित्य अंतर्जाल पर डालने का कार्य अभी बहुत दूर है, जब कि पश्चिमी भाषाओं में यह कार्य तेज़ी से चल रहा है. यूनीकोड के लिये रोमन लिपि की वैश्विक स्वीकार्यता ने सभी को रोमन लिपि सीखना अनिवार्य कर दिया है। इससे भविष्य में देवनागरी रोमन लिपि के माध्यम से ही लिखी जायेगी। हमें इस तथ्य को अनदेखा नहीं करना चाहिये हैं कि यदि पश्चिमी देशों में ३५ सहस्त्र छात्र हिंदी पढ़ते हैं तो भारत में ३५ करोड़ छात्र अंग्रेज़ी पढ़ते हैं।

अंतर्जाल एवं एस. एम. एस. की भाषाओं में होने वाले प्रयोगों की सफ़लता से ऐसा प्रतीत होता है कि विश्व में भविष्य की भाषा 'ग्लोबिश' होगी, जो इंग्लिश में अन्य भाषाओं के शब्दों का मिश्रण होगा और जिसकी मूल लिपि रोमन होगी। अन्य लिपियां एवं शब्द रहेंगे परंतु रोमन अक्षरों से परिवर्तिति होकर लिखे जायेंगे।[10]

## प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1.भाषा, विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार
2.भाषा-प्रौद्यौगिकी एवं भाषा-प्रबंधन, सूर्यप्रसाद दीक्षित
3.हिन्दी राष्ट्रभाषा. राजभाषा, जनभाषा, शंकर दयाल सिंह
4.राजभाषा हिन्दी विचार और विश्लेषण, डॉ गोपाल शर्मा
5.आज की हिन्दी , सुरेश कुमार जिन्दल, फूलदीप कुमार
6.हिन्दी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य, कृष्ण कुमार गोस्वामी
7. http://bharatdiscovery.com
8. http://sahityasamvad.com
9. http://drshashisingal.worldpress.com
10. http://makingindiaonline.in